विकसित भारत की संकल्पना में राजभाषा प्रबंधन की भूमिका विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई द्वारा अपने कोलकाता केंद्र में दिनांक 21-22 अप्रैल 2024 के दौरान "**विकसित भारत की संकल्पना में राजभाषा प्रबंधन की भूमिका**" विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। दिनांक 21.04.2024 इस दो दिवसीय राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता के निदेशक डॉ. बी.के. दास मुख्य अतिथि थे। संस्थान के निदेशक एवं कुलपति डॉ. रविशंकर सी.एन. ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस कार्यक्रम में केंद्र के प्रमुख डॉ. तापस कुमार घोषाल और संस्थान के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) जगदीशन ए.के. भी उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि ने कहा कि किसी देश के त्वरित विकास के लिए मातृभाषा का विकास भी ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि मातृभाषा को महत्व देकर ही चीन और जापान जैसे दुनिया के कई देशों ने विकसित देश की श्रेणी में आयी है। उन्होंने यह भी कहा कि मातृभाषा के माध्यम अर्जित ज्ञान हमेशा के लिए दिमाग में बना रहता है। उन्होंने उपस्थित वैज्ञानिकों और अन्य प्रतिभागियों से आग्रह किया कि शोध पत्र हिंदी में लिखें, सरल हिंदी में वैज्ञानिक विषयों पर किताबें लिखें, जो आम किसान भी समझ सकें। हिंदी में काम छोटे-छोटे रूप में शुरू करें। अंग्रेज़ी के लिए हम ज़्यादा समय देते हैं, हिंदी के लिए भी कुछ समय देकर देखिए। आजकल कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हुए भी आसानी से हिंदी में काम किया जा सकता है। हिंदी राष्ट्रीय एकता के लिए और लोगों के बीच अपनापन लाने के लिए ज़रूरी है। मन में भ्रम होता है कि हम अंग्रेज़ी ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन वास्तविकता इससे कोसों दूर है। हिंदी में काम करने के लिए प्रशिक्षण और क्षमता-निर्माण पर अधिक ध्यान देना चाहिए। एक भारत, श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए हिंदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक एवं कुलपति डॉ. रविशंकर, सी.एन. ने कहा कि भरत में बहुत-सी भाषाएँ हैं, लेकिन देश की एकता को बनाए रखने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अलावा देश की संपर्क भाषा के रूप में भी हिंदी ने अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने उपस्थित सभी प्रतिभागियों से आग्रह किया कि हिंदी को दिल से अपनाए। उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा के रूप में हिंदी विकास तो हुआ है, लेकिन और भी बहुत अधिक गुंजाइश है। यह संगोष्ठी इसी उद्देश्य से आयोजित की गई है। कुछ क्षेत्र में हुए विकास के संदर्भ में देखा जाए तो भारत किसी भी देश से कम नहीं है। मात्स्यिकी क्षेत्र को लें तो भारत सबसे आगे है। ऐसे ही हिंदी का भी विकास होना चाहिए। मछुआरों तक मात्स्यिकी की नवीन तकनीकियाँ पहुँचनी चाहिए। इसके लिए विभिन्न तकनीकी जानकारी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होनी चाहिए। भारत को विकसित देश के रूप में देखना है तो इसमें हिंदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, कोलकाता केंद्र के प्रमुख डॉ. तापस कुमार घोषाल ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और संयुक्त निदेशक

(राजभाषा) श्री ए.के. जगदीशन ने दो दिवसीय संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. दिलीप कुमार सिंह ने आभार प्रकट किया तथा मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) श्री प्रताप कुमार दास ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इस अवसर पर निम्नलिखित प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया :

<u>प्रशिक्षण मैनुअल</u>

- मीठे पानी में मछली पालन

<u>पुस्तिकाएँ</u>

- मूल्यवर्धित मछली उत्पाद : मत्स्य उद्यमियों के लिए एक अवसर
- पश्चिम बंगाल के कार्प मछली में जीवाणु रोग का क्षेत्रीय अवलोकन
- उच्च मूल्यवाली द्विरंगी/त्रिरंगी लायनहेड गोल्डफिश के उत्पादन के लिए एक व्यवहार्य गृहस्थी मॉडल
- मिश्रित मछली पालन के लिए आहार रणनीतियाँ

उद्‌घाटन समारोह के बाद राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन विषय पर आयोजित तकनीकी सत्र-1 के अंतर्गत कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर राम आह्लाद चौधरी ने "हिंदी का वैश्विक संदर्भ : विकसित भारत के परिप्रेक्ष्य में" विषय पर व्याख्यान दिया; क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भारत सरकार, कोलकाता के उप निदेशक डॉ. विचित्रसेन गुप्त ने "राजभाषा प्रबंधन एवं कुशल कार्यान्वयन" विषय पर तथा सी.एस.आई.आर.-केंद्रीय काँच एवं सेरामिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता के हिंदी अधिकारी श्री संजीव कुमार सिंह ने "राजभाषा एवं इसकी संप्रेषणीयता" विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यानों के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

दिनांक 22 अप्रैल 2025 को दुसरे और तीसरे सत्र आयोजित किए गए। "राजभाषा और अनुवाद" विषय पर आयोजित दूसरे सत्र के अंतर्गत केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता के पूर्व प्रभारी डॉ. नवीन प्रजापति ने "वैज्ञानिक सामग्रियों का अनुवाद एवं अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली का चयन" विषय पर तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता के अनुवाद अधिकारी श्री विनोद कुमार यादव ने "अनुवाद के विभिन्न साधन और कंठस्थ 2.0" विषय पर व्याख्यान दिया। "राजभाषा और प्रौद्योगिकी" विषय पर आयोजित तीसरे सत्र के अंतर्गत कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रोफसर राम प्रवेश रजक ने "प्रौद्योगिकियों का विकास और भाषा का बदलता स्वरूप" विषय पर तथा माइक्रोसॉफ्ट भारत के निदेशक श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने "भाषा प्रौद्योगिकी एवं राजभाषा हिंदी तथा राजभाषा प्रबंधन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता" विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. जी.एच. पैलान, डॉ. परिमल सरदार, डॉ. गौरांग बिश्वास, डॉ. तापस कुमार घोषाल, डॉ. सुजाता साहू, डॉ. हंजाबाम मन्दाकिनी देवी और श्री ए.के. जगदीशन ने विभिन्न सत्रों के अध्यक्ष रहे तथा डॉ. सुमन मन्ना, श्रीमती स्वेता प्रधान, डॉ. दिलीप कुमार सिंह, डॉ. लीसा प्रियदर्शनी, श्री प्रताप कुमार दास, श्रीमती रेखा नायर और श्री संजीवन कुमार विभिन्न सत्रों के प्रतिवेदक रहे।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का समापन समारोह दिनांक 22.04.2025 को कोलकाता केंद्र के प्रमुख डॉ. तापस कुमार घोषाल की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, कोलकाता के निदेशक डॉ. प्रदीप डे मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने कहा कि विकसित भारत की संकल्पना में

राजभाषा प्रबंधन की भूमिका विषय पर आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वर्तमान समय में बहुत ही प्रासंगिक है। भारत के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के साथ भाषा विकास भी महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में राजभाषा हिंदी के विकास की ओर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है। हिंदी देश के करोड़ों लोगों की मातृभाषा है। अपनी-अपनी मातृभाषा में ही प्रारंभिक पढ़ाई होनी चाहिए। इस दिशा में भारत सरकार द्वारा लाई गई नई शिक्षा नीति एक सफल कदम है। उन्होंने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि राजभाषा हिंदी में ज़्यादा-ज़्यादा कार्य करें और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में भारत को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दें।

इससे पूर्व डॉ. दिलीप कुमार सिंह, वैज्ञानिक ने सभी का स्वागत किया और संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री प्रताप कुमार दास ने संगोष्ठी की रिपोर्ट सभा के सामने रखी। डॉ. दिलीप कुमार सिंह, वैज्ञानिक ने अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संयुक्त निदेशक (राजभाषा) श्री ए.के. जगदीशन ने आभार प्रकट किया। श्रीमती रेखा नायर, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने आभार प्रकट किया।

ICAR-Central Institute of Fisheries Education
Versova, Mumbai – 400061

A report on National Official Language Seminar

National Official Language Seminar on the Role of Official Language Management in the Concept of Developed India

ICAR-Central Institute of Fisheries Education, Mumbai organized a National Official Language Seminar on the topic "Role of Official Language Management in the Concept of Developed India" during 21-22 April 2024 at its Kolkata Centre. The inaugural ceremony of this two-day National Official Language Seminar was organized on 21.04.2024, in which Dr. B.K. Das, Director, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute, Barrackpore, Kolkata was the Chief Guest. Dr. Ravishankar C.N., Director and Vice Chancellor of the Institute presided over the program. Dr. Tapas Kumar Ghoshal, Head, Kolkata Centre and Jagdeesan A.K., Joint Director (OL) of the Institute were also present in the program.

The Chief Guest said that the augmentation of mother tongue is necessary for the rapid growth of a country. He said that many countries of the world like China and Japan have come in the category of developed countries only by giving importance to mother tongue. He also said that the knowledge acquired through mother tongue will remain in the mind forever. He urged the scientists and other participants write research papers and books on scientific subjects in simple Hindi, which even the common farmer can understand. Start working in Hindi gradually. We normally give more time to learning or working in English, now try to give a little time to learn Hindi too. Nowadays, work can be done easily in Hindi even using artificial intelligence. Hindi is important for national unity and to bring a sense of belonging among people. There is a misconception in the mind that we know English better, but the reality is far from it. More attention should be paid to training and capacity building for working in Hindi. Hindi also has an important role in realizing the concept of *Ek Bharat, Shreshtha Bharat*.

In his presidential address, the Director and Vice Chancellor of the Institute, Dr. Ravi Shankar, C.N. said that there are many languages in India, but Hindi plays an important role in maintaining the unity of the country. Apart from this, Hindi has also made its mark as the link language of the country. He urged all the participants to adopt Hindi wholeheartedly. He further said that Hindi has developed as an official language, but there is much more scope. This seminar has been organized for this purpose. With regard to the development in some fields, India is not less than any other country. If we consider the fisheries sector, India is at the forefront. Similarly, Hindi should also develop. New techniques of fisheries should reach the fishermen. For this, various technical information should be available in Hindi and other Indian languages. If India has to be seen as a developed country, then Hindi also has an important role in it.

At the outset, Dr. Tapas Kumar Ghoshal, Head, Kolkata Centre welcomed the participants and Joint Director (Official Language) Shri A.K. Jagdishan presented the outline of the two-day seminar. Dr. Dilip Kumar Singh, Scientist proposed vote of thanks and Chief Technical Officer Shri Pratap Kumar Das compeered the programme.

On this occasion, the following publications in Hindi were also released:

Training Manual

- *Meethe paani men machchali paalan*

Booklets

- *Moolyavardhit machchali uptaad : matsya udyamiyon ke liye ek avasar*
- *Paschim Bengal ke karp machchali mein jeevanu rog ka kshetriya avalokan*
- *Uchch muulyavaali dwirangi/trirangi Lionhead goldfish ke utpaadan ke liye ek vyavaharya gruhasthi model*
- *Mishrit machchali paalan ke lie ahaar rananeetiyan*

After the inaugural ceremony, under the Technical Session-1 on "Effective Implementation of Official Language", lectures were delivered on "*Hindi Ka Vaishwik Sandarbh: Viksit Bharat Ke Paridrishya mein*", "*Rajbhasha Prabandhan aur Kushal Karyanwayan*" and "*Rajbhasha aur iski Sampreshaneeyata*" by Prof. Ram Aahlad Chaudhary, Kolkata University; Dr. Vichitrasen Gupta, Deputy Director, Regional Implementation Office, Government of India, Kolkata and Mr. Sanjeev Kumar Singh, Hindi Officer, CSIR-Central Glass and Ceramic Research Institute, Kolkata, respectively. A cultural program was also organized after the lectures.

The second and third sessions were held on 22 April 2025. Under the second session on "*Rajbhasha aur Anuvad*", Dr. Naveen Prajapati, former in-charge of Central Translation Bureau, Kolkata and Mr. Vinod Kumar Yadav, Translation Officer, National Library, Kolkata, delivered a lectures on "*Vaigyanik Samagriyon Ka Anuvad tatha Anuvad mein paribhashik Shabdavali ka Chayan*" and *"Anuvad ke Vibhinn Saadhan aur Kanthasth 2.0"*, respectively. In the third session on *"Rajbhasha aur Proudyogiki"*, Prof. Ram Pravesh Rajak, Kolkata University and Shri. Balendu Sharma Dadhich, Director, Microsoft India delivered a lecture on *"Proudyogikiyon ka Vikas evam Bhasha ka Badalta Swarup"* and *"Bhasha Proudyogiki evam Rajbhasha Hindi tatha Rajbhasha Prabandhan mein Kritrim Buddhimatha"*, respectively. Dr. G.H. Pailan, Dr. Parimal Sardar, Dr. Gaurang Biswas, Dr. Tapas Kumar Ghoshal, Dr. Sujata Sahu, Dr. Hanjabam Mandakini Devi and Shri A.K. Jagdishan chaired various sessions and Dr. Suman Manna, Smt. Sweta Pradhan, Dr. Dilip Kumar Singh, Dr. Lisa Priyadarshini, Shri Pratap Kumar Das, Smt. Rekha Nair and Shri Sanjivan Kumar were the rapporteurs.

The closing ceremony of this two-day National Official Language Seminar was held on 22.04.2025 under the chairmanship of Dr. Tapas Kumar Ghoshal, Head, Kolkata Centre, in which Dr. Pradeep Dey, Director, Agricultural Technology Application Research Institute, Kolkata was the Chief Guest. The Chief Guest said that the topic of this national seminar is very relevant in the present scenario. Along with the economic and social development of India, the development of language is also important. In this context, there is a need to pay more attention to the development of Official Language Hindi. Hindi is the mother tongue of maximum of people in the country. Primary education should be in one's mother tongue. The new education policy brought by the Government of India is a successful step in this direction. He urged the participants to work as much as possible in official language Hindi and contribute significantly in taking India forward towards becoming a developed nation.

At the outset, Dr. Dilip Kumar Singh, Scientist welcomed the guests. Mr. Pratap Kumar Das, Chief Technical Officer presented the report of the seminar and Joint Director (OL) Mr. A.K. Jagdeesan proposed vote of thanks. Smt. Rekha Nair, Chief Technical Officer compeered the program.

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

ICAR-CENTRAL INSTITUTE OF FISHERIES EDUCATION
KOLKATA CENTRE

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में
राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
21-22 अप्रैल 2025
कोलकाता

राजभाषा एवं इसकी संवेदनशीलता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
कोलकाता

राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी - 2025
विकसित भारत की संकल्पना में राजभाषा प्रबंधन की भूमिका
कोलकाता